किसी वस्तु की सीमान्त उपयोगिता उसके मूल्य की अधिकतम सीमा निश्चित करती है। उदाहरण के लिए निम्न तालिका बाजार में ग्राहकों की पेन की माँग का अनुमान लगा सकते हैं

मूल्य	प्रतिपेन	पेन की माँग
8₹	1	20
6₹	1	30
4₹	1	50
2₹	1	75
1₹	1	100

स्पष्ट है कि जब पेन का मूल्य 8₹ प्रति पेन है तो माँग केवल 20 पेन की है और जब मूल्य घटकर 1₹ हो जाता है तो माँग बढ़कर 100 पेन की हो जाती है। इससे ज्ञात होता है कि क्रेता किसी वस्तु के लिए कम से कम मूल्य देना चाहता है, किन्तु किसी भी हालत में सीमान्त उपयोगिता से अधिक मूल्य नहीं देता है। अतः कहा जा सकता है कि सीमान्त उपयोगिता अधिकतम सीमा है जिससे अधिक मूल्य क्रेता नहीं देना चाहता है। यह नियम माँग नियम पर आधारित है।

Supply of commodity → किसी वस्तु की पूर्ति उस वस्तु के उत्पादक या विक्रेता करते हैं। उत्पादक या विक्रेता को किसी वस्तु को उत्पन्न करने में कुछ न कुछ Cost लगाना है। अतएव उत्पादक या विक्रेता वस्तुओं की पूर्ति उत्पादन व्यय पर ध्यान देते हैं। साधारणतया विक्रेता सदा उत्पादन अपनी वस्तु के लिए अधिक से अधिक मूल्य लेना चाहता है किन्तु किसी भी हालत में वह सीमान्त उत्पादन व्यय से कम मूल्य लेना नहीं चाहता है। इस प्रकार पूर्ति के पीछे उत्पादन व्यय है। इसे निम्न तालिका में दर्शाया जा सकता है।

गया है

मूल्य	प्रतिसेब	सेब की पूर्ति
८ P	1	100
६ P	1	75
५ P	1	50
२ P	1	30
१ P	1	२०

इस प्रकार सेब की कीमत प्रति सेब 8P रहने पर सेब की पूर्ति 100 तथा 1P रहने पर सेब की पूर्ति २० है। इससे स्पष्ट है कि विक्रेता अपनी वस्तु के लिए सदा अधिक से अधिक मूल्य लेना चाहता है। किन्तु किसी भी हालत में वह उत्पादन व्यय से कम मूल्य लेना नहीं चाहता है। अर्थात वह सीमान्त व्यय से कम मूल्य पर अपनी वस्तु कभी नहीं बेचेगा। यह अवधारणा के पूर्ति के नियम पर आधारित है।

Equilibrium of demand and supply → पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति में किसी वस्तु का मूल्य उसकी माँग एवं पूर्ति द्वारा निर्धारित होता है। एक ओर उस वस्तु के क्रेता होते हैं जो किसी भी स्थिति में सीमान्त उपयोगिता से अधिक मूल्य देने को तैयार नहीं होते हैं और दूसरी ओर विक्रेता सदा अपनी वस्तु के लिए अधिक से अधिक मूल्य लेना चाहता है, किन्तु किसी भी स्थिति में वह सीमान्त व्यय से कम मूल्य लेने को तैयार नहीं होता है। इस प्रकार दोनों पक्ष मूल्य को अपने अनुकूल बनाने का प्रयत्न करता है। प्रो॰ मार्शल के अनुसार, "The price may be tossed hither and thither like a shuttlecock as one side or the other gets the better in the higgling and bargaining of the market."

इस प्रकार यह उक्ति चरितार्थ होती है कि "Price is determined neither by demand nor by supply but

By the interaction of the two.

इसे निम्न तालिका द्वारा भी स्पष्ट किया जा सकता है

मूल्य प्रति सेब	सेब की मांग	सेब की पूर्ति
5₹	20	100
4₹	30	75
3₹	50	50
2₹	75	35
1₹	100	20

उपरोक्त तालिका के अनुसार यदि सेब का मूल्य बाजार में 5₹ प्रति सेब है तो मांग केवल 20 सेब की है किंतु विक्रेता [illegible] में 100 सेब बेचने को तैयार होते हैं। परन्तु जब मूल्य घट कर 4₹ हो जाता है तो सेब की मांग 30 तथा पूर्ति 75 हो जाती है। इस प्रकार विक्रेता अपनी सभी सेब को नहीं बेच सकता है। फिर जब सेब का मूल्य 1₹ प्रति सेब है तो मांग 100 सेब तथा पूर्ति 20 सेब की हो जाती है। अतएव ग्राहकों को अधिक मूल्य देना पड़ेगा क्योंकि उस मूल्य पर उनकी सम्पूर्ण मांग की पूर्ति नहीं हो सकती है। जब मूल्य 3₹ है तब भी [illegible] को अधिक मूल्य देना पड़ रहा है। [illegible] जब मूल्य 3₹ प्रति सेब है तो सेब की मांग और पूर्ति दोनों आपस में बराबर होती है। अतएव 3₹ मूल्य तय होता है। इसे निम्न चित्र द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है। इस चित्र में DD मांग की रेखा, SS पूर्ति की रेखा, दोनों रेखा आपस में P बिन्दु पर मिलती हैं। इस बिन्दु पर सेब

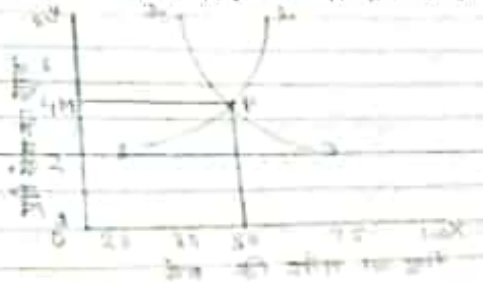

माँग तथा पूर्ति दोनों बराबर होते हैं। इसलिए सेब का
कीमत बाजार में PM (यानी 4 प्रति रुपया) होगी। इस चित्र

बाजार में सेब की माँग और पूर्ति दोनों 50 के बराबर है। अतः इसे साम्य बिन्दु कहा जाता है तथा जिस बिन्दु पर ये दोनों बराबर होते हैं, उसे साम्य मूल्य कहा जाता है। इस प्रकार पूर्ण प्रतियोगिता बाजार में किसी वस्तु की कीमत माँग और पूर्ति की सापेक्षिक शक्तियों द्वारा इनके सन्तुलन तय होता है।

Sunil Kumar